**जयपुर में आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित किए जा रहे चौथे आयुर्वेद दिवस समारोह  के अवसर पर संबोधन**

**25 अक्तूबर 2019**

---

आज धन्वंतरि जयंती के शुभ अवसर पर इस चौथे आयुर्वेद दिवस समारोह में आप सबके बीच आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मैं आयुष मंत्रालय के माननीय राज्य मंत्री, श्री श्रीपाद येसो नाईक जी का आभारी हूँ कि उन्होने मुझे इस विशेष अवसर पर आमंत्रित किया। जयपुर जैसे सुंदर शहर में 'लम्बी आयु के लिए आयुर्वेद' के प्रासंगिक और महत्वपूर्ण विषय को केंद्र में रख कर इस समारोह के आयोजन के लिए मैं आयुष मंत्रालय तथा राजस्थान सरकार को भी बधाई देता हूँ।

बहुत खुशी की बात है कि इस समारोह के लिए चुने हुए विषय पर कल एक राष्ट्रीय सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

सबसे पहले मैं प्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय धन्वंतरि आयुर्वेद पुरस्कार' से इस वर्ष सम्मानित किए जा रहे व्यक्तियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में आपके अमूल्य योगदान और आपकी असाधारण उपलब्धियों पर हम सबको गर्व है।

साथियो, जो राष्ट्र अपने अतीत, अपनी परम्परा और अपने इतिहास को भुला देता है, दुनिया उसे कभी भी सम्मान या महत्व नहीं देती है। हमारी परंपरा से ही हमारी पहचान है। हमारे अतीत से ही हमारा सम्मान और महत्व है।

यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि भारतीय सभ्यता और संस्कृति की कई समृद्ध परम्पराओं को हमने लम्बे समय से भुलाए रखा था। आयुर्वेद भी उनमें से एक है। पश्चिम के प्रभाव के कारण हम पूरी तरह से पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति पर निर्भर हो गए। हम भूल गए कि हमारे देश में आयुर्वेद जैसी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति भी हज़ारों सालों से मौजूद है।

लेकिन, वर्तमान सरकार ने आयुर्वेद पद्धति को नवजीवन दिया है। इसके लिए एक अलग मंत्रालय बनाया गया, जो कि बहुत बड़ा कदम है। आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार के लिए सरकार दिन-रात मेहनत कर रही है। इन सब का उद्देश्य यही है कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को सर्व सुलभ और किफ़ायती बनाया जाए। लोगों में और पूरे विश्व में इसके बारे में जागरूकता फैलायी जाए।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि  हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति एक बार फिर से पूरे विश्व में लोकप्रिय हो रही है। पूरा विश्व इसे उचित सम्मान दे रहा है।

लेकिन हम सबको यह भी समझ लेना चाहिए कि आयुर्वेद को वैश्विक चिकित्सा पद्धति की मुख्य धारा में लाना सिर्फ हमारी अपनी परम्परा के उत्थान या सम्मान का मामला नहीं है। बल्कि, यह आज के युग की परिस्थितियों की मांग है। आज की जरूरत है।

साथियो, दुनिया अब सिर्फ हेल्थ नहीं चाहती है। बल्कि, हेल्थ के साथ-साथ अब पूरी दुनिया वेलनेस भी चाहती है। लेकिन, वेलनेस एक ऐसी चीज है जो एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति नहीं दे सकती है। इसके लिए दुनिया को आयुर्वेद और योग जैसे प्राकृतिक पद्धतियों की तरफ ही मुड़ना होगा।

दूसरी बात यह भी है कि एलोपैथिक चिकित्सा के कई साइड इफेक्ट्स भी होते हैं। कई बार तो ऐसा होता है कि एक रोग का उपचार करने के क्रम में दूसरा रोग पैदा हो जाता है। इसलिए दुनिया आज एक ऐसी चिकित्सा पद्धति चाहती है जिसमें साइड इफेक्ट न के बराबर हो। इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि आज पूरे विश्व में आयुर्वेद के लिए अपार संभावनाएं मौजूद है। पूरा विश्व और पूरी मानवता आशा भरी नजरों से भारत की ओर देख रही है।

ऐसे समय में हमें सक्रिय होकर जनकल्याण के लिए आयुर्वेद जैसी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को बेहतर से बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए।

वर्तमान सरकार ने इस बात के महत्व को समझा है। इसलिये आयुर्वेद के क्षेत्र में काफी सकारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं। वर्ष 2014 में सरकार ने आयुष विभाग को एक मंत्रालय का दर्जा दे दिया। सरकार पिछले पाँच वर्ष से सॉफ्ट पावर के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योग और आयुर्वेद को बढ़ावा दे रही है।

इस पृष्ठभूमि में भारत सरकार का आयुष मंत्रालय वर्ष 2016 से धनतेरस के दिन एक समुचित विषय के साथ हर साल आयुर्वेद दिवस का आयोजन करता आ रहा है। वेद-पुराणों के अनुसार, भगवान धन्वंतरि देवताओं के चिकित्सक थे।

आयुष मंत्रालय आयुर्वेद को बढ़ावा देने, इसके प्रचार-प्रसार और इसे लोकप्रिय बनाने के लिए देश-विदेश में विभिन्न कार्यकलापों का आयोजन कर रहा है। इसमें आयुर्वेद से जुड़े लोग और इसके शुभचिन्तक भी शामिल होते हैं। अन्य पहलों के साथ ही मंत्रालय ने इस पुरस्कार की शुरुआत की है जिसमें एक प्रशस्ति पत्र, ट्रॉफी (धन्वंतरि की प्रतिमा) और पाँच लाख रुपये का नकद पुरस्कार शामिल है जो हमने अभी-अभी दिया है।

मित्रो, मंत्रालय ने इस वर्ष के समारोह के लिए बहुत ही उपयुक्त और प्रासंगिक विषय चुना है। इस वर्ष का विषय 'लम्बी आयु के लिए आयुर्वेद' है जो आयुष्मान भारत योजना पर आधारित है। आयुष्मान का शाब्दिक अर्थ होता है दीर्घायु। जैसा कि आप सब जानते हैं, आयुष्मान भारत, भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है जिसे 2018 में सबके लिए स्वास्थ्य सुविधा के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शुरू किया गया था। इसमें स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने की नीति को अपनाया गया है और इसके दो परस्पर संबंधित घटक हैं – पहला एक लाख पचास हजार (1,50,000) स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्रों की स्थापना के उद्देश्य से स्वास्थ्य केंद्र स्थापित करना; और दूसरा प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना के माध्यम से स्वास्थ्य बीमा। हमारी राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति,

2017 में यह लक्ष्य रखा गया है कि विकास से जुड़ी नीतियों में निवारक और स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने के पहलू को शामिल किया जाएगा।

यह सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के लक्ष्य संख्या 3 और सभी के लिए स्वास्थ्य सुविधा के हमारे लक्ष्य के अनुरूप भी है। आयुष्मान भारत भी आयुष मंत्रालय की एक प्रमुख योजना है जिसके अंतर्गत आयुष मंत्रालय आयुष प्रणालियों के सिद्धांतों के अनुसार 12500 स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्रों का संचालन करेगा।

आयुर्वेद इस बात को मानता है कि प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर और शरीर, मन तथा आत्मा के बीच संतुलन के माध्यम से सेहत और दीर्घायु प्राप्त की जा सकती है। आयुर्वेद की आठ शाखाओं में से एक, रसायन तंत्र में कायाकल्प करने, नवजीवन प्रदान करने, और बढ़ती आयु में भी स्वस्थ शरीर की बात कही गई है। आयुर्वेद के जरिए लम्बी आयु, बौद्धिक, शारीरिक और मानसिक शक्ति और रोगों से मुक्ति मिलती है।

लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर हमें और ध्यान देने की जरूरत है। एक बात तो यह कि आयुर्वेद की दवाईयों की उपलब्धता को और अधिक बढ़ाया जाए। एलोपैथिक दवाइयों की तरह ही आयुर्वेद की गुणवत्तापूर्ण दवाइयां भी आसानी से उपलब्ध होने चाहिए।

दूसरी बात यह है कि, हमें और अधिक संख्या में आयुर्वेद के बेहतर प्रशिक्षित चिकित्सक तैयार करने होंगे।

तीसरी बात यह कि, जिन औषधीय पौधों से आयुर्वेदिक दवाइयों को बनाया जाता है, हमें उनका और अधिक से अधिक मात्रा में उत्पादन करना होगा।

कहने का मतलब यह है कि हमें आयुर्वेद की गुणवत्ता, एफोर्डेबिलिटी, एक्सेसिबलिटी बढाने के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे।

मुझे इस बात की खुशी है कि आयुष मंत्रालय न केवल देश में बल्कि विदेशों में स्थित सभी भारतीय दूतावासों और राज्य सरकारों को सार्वजनिक व्याख्यानों, सेमिनारों, स्वास्थ्य शिविर आदि के माध्यम से आयुर्वेद दिवस को उपयुक्त रूप से मनाए जाने के लिए पत्र लिखकर आयुर्वेद को बढ़ावा देने और इसका प्रचार-प्रसार करने की दिशा में बहुत अच्छा काम कर रहा है।

आयुर्वेद इस दर्शन पर आधारित है कि 'निवारण उपचार से बेहतर है' और इसमें मानव जीवन शैली को स्वस्थ बनाने की क्षमता भी है, इसलिए मुझे पूरी आशा है कि इसका भविष्य उज्ज्वल है।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार फिर आप सबको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे यहाँ आमंत्रित किया। मैं आयुष मंत्रालय तथा सभी संबंधित लोगों के भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ।

धन्यवाद।

---